

नवरात्रि

हिन्दू पंचांग के अनुसार वर्ष में चार बार नवरात्रि का पर्व मनाया जाता है, जिसमें से दो गुप्त नवरात्रि हैं, एक चैत्र नवरात्रि और एक शारदीय नवरात्रि है। चैत्र मास में चैत्र या वसंत नवरात्रि, आषाढ़ मास में गुप्त नवरात्रि, अश्विन (क्वार) मास में शारदीय नवरात्रि और माघ मास में गुप्त नवरात्रि मनायी जाती है। सभी नवरात्रि एक दूसरे से अलग हैं। आषाढ़ और माघ की गुप्त नवरात्रि में १० महाविद्याओं की पूजा होती है जबकि चैत्र और अश्विन नवरात्रि में नौ दुर्गा की पूजा होती है। चैत्र/वसंत नवरात्रि अश्विन/शारदीय नवरात्रि से निम्न प्रकार भिन्न है।

१- चैत्र नवरात्रि से हिन्दू नव वर्ष की शुरुआत होती है। यह नवरात्रि हिन्दू नव वर्ष के प्रथम माह चैत्र के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा अर्थात् माह के प्रथम दिवस से प्रारम्भ होती है जबकि शारदीय नवरात्रि वर्ष के मध्य का समय होता है। चैत्र नवरात्रि की नवमी को भगवान राम का जन्म हुआ था, इसीलिए इसे राम नवरात्रि भी कहते हैं।

२- चैत्र नवरात्रि में साधना और कठिन व्रत का ज्यादा महत्व होता है जबकि शारदीय नवरात्रि में दुर्गा पूजा और सात्विक आराधना का ज्यादा महत्व होता है तथा उत्सव मनाया जाता है।

३- चैत्र नवरात्रि के अंत में रामनवमी आती है, अतः इस नवरात्रि में शक्ति और विष्णु दोनों की आराधना की जाती है। जबकि शारदीय नवरात्रि के अंत में दुर्गा महानवमी आती है और उसके अगले दिन विजयदशमी आती है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान राम ने अश्विन मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि से नवमी तिथि तक माँ दुर्गा की उपासना की थी। इसके बाद दशमी तिथि को उन्होंने रावण का वध किया था। शास्त्रों में यह भी मान्यता है कि अश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दसवीं तिथि को ही माँ दुर्गा ने महिषासुर नामक दैत्य का वध किया था। इसी कारण अश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दसवीं तिथि को विजयदशमी के पर्व के रूप में मनाया जाता है और इसीलिए शारदीय नवरात्रि में विशुद्ध रूप से शक्ति की उपासना की जाती है।

४- चैत्र नवरात्रि आध्यात्मिक इच्छाओं की पूर्ति, सिद्धि एवं मोक्ष हेतु मनाया जाता है, जबकि शारदीय नवरात्रि को सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति हेतु मनाया जाता है।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार नवरात्रि में शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि अर्थात् नवरात्रि के प्रथम दिन माँ दुर्गा गणेश जी, भगवान कार्तिकेय समेत अपने परिवार के साथ पृथ्वी लोक

पर पधारती हैं। पृथ्वी लोक माता रानी का मायका है। वे यहाँ पूरी नवरात्रि रहती हैं और नवरात्रि के बाद वापस चली जाती हैं।

माता रानी का वाहन सिंह है परन्तु नवरात्रि में पृथ्वी आगमन के समय उनकी सवारी बदल जाती है। नवरात्रि प्रारम्भ होने वाले दिन/वार (प्रतिपदा दिवस) से माँ दुर्गा की सवारी निर्धारित होती है। इसी प्रकार जिस दिन वह पृथ्वी से प्रस्थान करती हैं उस दिन/वार के आधार पर प्रस्थान की सवारी तय होती है। अलग-अलग दिन/वार के आधार पर माँ दुर्गा के वाहन डोली/पालकी, नाव, घोड़ा, हाथी, मुर्गा, मनुष्य व भैंसा होते हैं।

यदि नवरात्रि की शुरुआत रविवार या सोमवार से हो रही है तो माँ का वाहन हाथी होता है। मंगलवार या शनिवार को घट/कलश स्थापना होने पर माँ का वाहन घोड़ा होता है। बुधवार के दिन प्रतिपदा होने पर माँ नाव में सवार होकर आती हैं। गुरुवार या शुक्रवार से नवरात्रि शुरू होने पर माँ दुर्गा डोली में बैठकर आती हैं। अलग-अलग दिवस/वार के अनुसार माता की सवारी के संकेत अलग-अलग होते हैं तथा प्रत्येक सवारी का शुभ या अशुभ संकेत होता है और मान्यता है कि उसी के अनुसार पूरे वर्ष घटनाएं घटित होती हैं।

- हाथी की सवारी— अधिक वर्षा, सुख सम्पदा का संकेत
- घोड़े की सवारी— सत्ता परिवर्तन, पड़ोसी देशों से लड़ाई का संकेत
- डोली की सवारी— रक्तपात, तांडव, जन-धन हानि, महामारी का संकेत
- नाव की सवारी— भक्तों के सारे कष्टों को हरने, मनोकामना पूर्ण होने का संकेत

इसी प्रकार नवरात्रि के समापन रविवार या सोमवार होने की दशा में माँ दुर्गा भैंसे की सवारी से वापस जाती हैं। मंगलवार या शनिवार नवरात्रि का समापन हो तो माँ दुर्गा मुर्गे पर सवार होकर वापस जाती हैं। बुधवार या शुक्रवार को नवरात्रि समाप्त होने की दशा में माँ की वापसी हाथी से होती है। यदि नवरात्रि का समापन गुरुवार को हो रहा है तो माँ मनुष्य के ऊपर सवार होकर वापस जाती हैं। वापसी की सवारी का संकेत निम्नानुसार है :-

- भैंसे की सवारी— शोक और रोग बढ़ेंगे
- मुर्गे की सवारी— दुःख और कष्ट की वृद्धि
- हाथी की सवारी— अत्यधिक वर्षा, सुख सम्पदा के संकेत
- मनुष्य की सवारी— सुख और शांति की वृद्धि

नवरात्रि पर माँ दुर्गा के नौ रूपों की विधि विधान से पूजा अर्चना होती है। इन नौ दिनों में माँ आदिशक्ति दुर्गा के नौ भिन्न-भिन्न रूपों की पूजा की जाती है। देवी माँ का प्रत्येक रूप नवग्रह में से एक ग्रह (चंद्रमा, मंगल, शुक्र, सूर्य, बुध, गुरु, शनि, राहु, केतु) की स्वामिनी को दर्शाता है तथा उनसे जुड़ी बाधाओं को दूर करने व ग्रह के प्रभाव को प्रबल करने के लिए भी माँ को पूजा जाता है।

सनातन धर्म के अनुसार भगवती माता दुर्गा, जिन्हें आदिशक्ति जगत्जननी जगदम्बा के नाम से भी जाना जाता है, के निम्नवत् नौ स्वरूप हैं :-

प्रतिपदा : माँ शैलपुत्री

माँ शैलपुत्री माता दुर्गा का प्रथम स्वरूप हैं। ये शैलराज हिमालय की पुत्री हैं, इसी कारण इनका नाम शैलपुत्री है। इन्हें पार्वती, सती, भवानी तथा हेमावती के नाम से भी जाना जाता है। माँ की सवारी वृष होने के कारण इन्हें वृषारूढ़ा भी कहा जाता है। माँ के दो हाथ हैं, दाहिने हाथ में माँ त्रिशूल तथा बाएं हाथ में कमल का फूल धारण किए हुए हैं। माँ का यह रूप सुखद मुस्कान और आनंदित दिखाई पड़ता है, सभी भाग्य का प्रदाता है तथा चंद्रमा के पड़ने वाले किसी भी बुरे प्रभाव को नियंत्रित करता है।

द्वितीया : माँ ब्रह्मचारिणी

पौराणिक कथाओं के अनुसार माँ ब्रह्मचारिणी, जिनके नाम का शाब्दिक अर्थ "तप का आचरण करने वाली या तपस्या करने वाली" है, का जन्म दक्ष प्रजापति के घर हुआ था। इन्हें देवी दुर्गा का अविवाहित रूप माना जाता है। वह तपस्या की प्रतीक हैं। भगवान शिव को पति के रूप में प्राप्त करने के लिए माँ ने कई वर्षों तक फल फूल का आहार करते हुए, उसके बाद कई वर्षों तक पृथ्वी पर पत्तेदार सब्जियों का आहार कर, पुनः कई वर्षों तक केवल बिल्व पत्तों का सेवन कर तथा बाद में अपनी तपस्या को और कठिन कर बिना बिल्व पत्र/भोजन और जल के तप किया, इसीलिए माँ ब्रह्मचारिणी (ब्रह्म-तपस्या, चारिणी-आचरण करने वाली) कहलाई। माता के इस रूप को अपर्णा के नाम से भी जाना जाता है। माँ नंगे पाँव चलती हैं। माँ के दो हाथ हैं, दाहिने हाथ में जपमाला और बायें हाथ में कमण्डल धारण किये हुए हैं। माँ मंगल ग्रह की स्वामिनी हैं, सभी भाग्य की प्रदाता हैं तथा निष्ठा और ज्ञान की प्रतीक हैं।

तृतीया : माँ चंद्रघंटा

माँ चंद्रघंटा, जिनके नाम का शाब्दिक अर्थ घण्टी के आकार में अर्द्धचंद्र धारण किये हुए देवी है, माता पार्वती का विवाहित रूप है। भगवान शिव से विवाह के उपरान्त देवी महागौरी ने अपने माथे का अर्द्धचंद्र से श्रृंगार करना प्रारम्भ कर दिया जिसके कारण माता को चंद्रघंटा कहा जाने लगा। किवदन्तियों के अनुसार माँ चंद्रघंटा की तृतीय नेत्र हमेशा खुली रहती है

क्योंकि माँ राक्षसों, दैत्यों और दुष्टों के संहार के लिए हमेशा सजग रहती हैं। माँ का यह रूप वीरता एवं साहस का प्रतीक है। अपने सुनहरे रंग के साथ वह सुंदरता, अनुग्रह और लालित्य की मूरत भी हैं। माता की सवारी बाघिन है। माँ चंद्रघंटा के दस हाथ हैं, चार दाहिने हाथों में त्रिशूल, गदा, तलवार व कमण्डल है तथा वरुण मुद्रा में पाँचवां दाहिना हाथ है। चार बाएँ हाथों में कमल का फूल, तीर, धनुष और जपमाला है तथा पाँचवां बायां हाथ अभय मुद्रा में है। माँ शुक्र ग्रह की स्वामिनी हैं। माँ भक्तों का कल्याण करने वाली और नकारात्मक शक्तियाँ दूर करने वाली हैं।

चतुर्थी : माँ कुष्माण्डा

माँ कुष्माण्डा के नाम को 03 भाग में विभक्त कर उनके नाम का अर्थ जाना जा सकता है— “कु” का अर्थ कुछ या थोड़ा, “ऊष्मा” का अर्थ ताप या ऊर्जा और अंडा का अर्थ ब्रह्माण्ड या सृष्टि अर्थात् जिनकी मंद मुस्कान और ऊष्मा के अंश से यह सृष्टि उत्पन्न हुई, वह माँ कुष्माण्डा हैं। कहा जाता है कि माँ कुष्माण्डा के द्वारा ही महालक्ष्मी, महाकाली और महासरस्वती अवतरित हुईं। देवी माँ भगवान सूर्य की शक्ति का कारण हैं और सूर्य के अंदर रहने की क्षमता रखती हैं। माँ की सवारी शेरनी है। माँ की आठ भुजाएँ हैं, दाहिनी भुजाओं में धनुष, बाण, कमल और कमण्डल हैं, बांयी भुजाओं में अमृत कलश, जपमाला, गदा और चक्र हैं। माँ सूर्य ग्रह की स्वामिनी हैं। माँ भक्तों को भवसागर से पार उतारकर उन्हें लौकिक—पारलौकिक उन्नति प्रदान करने वाली हैं। माँ के इस रूप को अष्टभुजा देवी के नाम से भी जाना जाता है।

पंचमी— माँ स्कन्दमाता

माँ पार्वती के भगवान स्कंद अर्थात् कार्तिकेय की माता बनने के बाद से उन्हें माँ स्कन्दमाता के रूप में जाना गया। माँ कमल के फूल पर विराजमान हैं, इसीलिए उन्हें देवी पद्मासना के नाम से भी जाना जाता है। माँ का वाहन उग्र शेर है। माँ के चार हाथ हैं, माँ के ऊपरी दोनो हाथों में कमल का फूल है, माँ दाहिने हाथ से अपनी गोद में स्कंद कुमार को लिए हुए हैं तथा एक बायां हाथ अभय मुद्रा में रहता है। माँ का यह स्वरूप मातृत्व, स्नेहमय एवं मन को मोह लेने वाला है। माँ बुध ग्रह की स्वामिनी हैं। अग्नि के देवी के रूप में लोकप्रिय माँ का रंग दूध के समान सफेद एवं निर्मल है। माँ सदैव अपने भक्तों का कल्याण करने के लिए तत्पर रहती हैं।

षष्ठी— माँ कात्यायनी

धार्मिक ग्रन्थों के अनुसार कात्यायन ऋषि की तपस्या से प्रसन्न होकर माँ ने उनके घर पुत्री के रूप में जन्म लिया था। ऋषि कात्यायन ने ही सर्वप्रथम इनका पूजन किया था, इसी

कारण इनका नाम देवी कात्यायनी पड़ा। माँ पार्वती ने दैत्य महिषासुर का वध करने के लिए देवी कात्यायनी का रूप धारण किया। यह देवी का सबसे हिंसक रूप है। प्राचीन कथाओं के अनुसार देवी कात्यायनी का जन्म सभी देवताओं के क्रोध से हुआ था। देवताओं की दुर्दशा देखकर माँ ने क्रोधित होकर लाल रंग के वस्त्र और आभूषण धारण कर योद्धा के रूप में महिषासुर का वध किया। माँ की सवारी शोभायमान शेर है। माँ के चार हाथ हैं, माँ बाएं हाथों में कमल का फूल और तलवार धारण किए हुए हैं, माँ का ऊपर वाला दाहिना हाथ अभय मुद्रा में तथा नीचे वाला दाहिना हाथ वरद मुद्रा में रहता है। माँ गुरु ग्रह की स्वामिनी हैं तथा अलौकिक तेज प्रदान करने वाली हैं।

सप्तमी— माँ कालरात्रि

देवी पार्वती ने शुभ और निशुभ नाम के दैत्यों का वध करने के लिए अपनी बाहरी सुनहरी त्वचा को हटाकर देवी कालरात्रि का रूप धारण किया। यह माता पार्वती का सबसे क्रूर एवं अति उग्र रूप है। माँ कालरात्रि का रंग काला है। अपने प्रचंड एवं क्रूर रूप में भी शुभ व मंगलकारी शक्ति से भक्तों को सदैव शुभ फल प्रदान करने के कारण माँ कालरात्रि को देवी शुभंकरी के रूप में भी जाना जाता है। माँ के चार हाथ हैं, माँ के दाहिने हाथ अभय तथा वरद मुद्रा में हैं और बाएं हाथों में माँ तलवार और घातक लोहे का हुक धारण किये हुए हैं। माँ की सवारी गधा है। माँ शनि ग्रह की स्वामिनी हैं। माँ डर और प्रेम दोनों का स्वरूप हैं। माँ भक्तों के सभी तरह का भय दूर करने वाली तथा दुष्टों का विनाश करने वाली हैं।

अष्टमी— माँ महागौरी

पौराणिक कथाओं के अनुसार सोलह साल की उम्र में देवी शैलपुत्री अत्यन्त सुन्दर थीं। इन्होंने जब भगवान शिव को पति के रूप में प्राप्त करने के लिए कई वर्षों तक कठोर तपस्या की तो इनका शरीर काला पड़ गया था। भगवान शिव ने प्रसन्न होकर इन्हें गौरवर्ण प्रदान किया। इसीलिए माँ महागौरी कहलाई। माँ महागौरी केवल श्वेत वस्त्र और आभूषण धारण करती हैं इस कारण इन्हें श्वेताम्बरधरा के नाम से भी जाना जाता है। माँ के चार हाथ हैं, माँ का दाहिना ऊपर वाला हाथ अभय मुद्रा में रहता है तथा नीचे वाले हाथ में त्रिशूल धारण करती हैं। माँ के बांये ऊपर वाले हाथ में डमरू रहता है और नीचे वाला हाथ वरद मुद्रा में रहता है। माँ की सवारी वृष या बैल है। माँ राहु ग्रह की स्वामिनी हैं। माँ भक्तों के सभी पापों को नष्ट करने वाली, अमोघ फलदायिनी, मोक्ष प्रदायिनी और भक्तों का कल्याण करने वाली हैं।

नवमी— सिद्धिदात्री

माँ सिद्धिदात्री के नाम का शाब्दिक अर्थ "अलौकिक शक्तियों की देवी और सिद्धि की देवी है" अर्थात् माँ सिद्धियों को प्रदान करने वाली देवी हैं। शक्ति की सर्वोच्च देवी माँ आदि—पराशक्ति, भगवान शिव के आधे भाग से सिद्धिदात्री के रूप में प्रकट हुईं। माँ सिद्धिदात्री अपने भक्तों को सभी प्रकार की सिद्धियाँ प्रदान करती हैं। धार्मिक कथाओं के अनुसार भगवान शिव ने भी देवी सिद्धिदात्री की सहायता से ही अपनी सभी सिद्धियाँ प्राप्त की थीं। माँ सिद्धिदात्री की पूजा मनुष्य, देव, गंधर्व, असुर, यक्ष और सिद्ध सभी के द्वारा की जाती हैं। माँ सिद्धिदात्री के भगवान शिव के आधे बाएँ भाग से प्रकट होने के कारण भगवान शिव को अर्धनारीश्वर नाम से जाना जाता है। माँ कमल के आसन पर विराजती हैं। माँ का वाहन सिंह है। माँ के चार हाथ हैं, माँ के दाहिने हाथ में गदा तथा चक्र और बाएँ हाथ में कमल का फूल व शंख है। माँ केतु ग्रह की स्वामिनी हैं। भक्तों की सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाली हैं।

जन्माष्टमी

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी या जन्माष्टमी या गोकुलाष्टमी भगवान विष्णु के दशावतारों में से आठवें और चौबीस अवतारों में से बाईसवें अवतार श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। भगवान विष्णु ने पृथ्वी को कंस के अत्याचार और आतंक से मुक्त कराने के लिए अवतार लिया था। यह श्री विष्णु का सोलह कलाओं से पूर्व भव्यतम अवतार है। श्रीकृष्ण का जन्म भाद्रपद माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि की मध्यरात्रि को रोहिणी नक्षत्र में मथुरा की राजकुमारी देवकी और श्री वसुदेव की आठवीं संतान के रूप में हुआ। कंस ने अपनी मृत्यु के भय से अपनी बहन देवकी और वसुदेव को मथुरा के कारागार में कैद किया हुआ था। कारागार में ही श्री कृष्ण का जन्म हुआ था। कंस से अपने नवजात पुत्र कृष्ण को बचाने के लिए वसुदेव ने मध्यरात्रि में जन्म के तुरन्त बाद ही उन्हें अपने मित्र नन्दबाबा और उनकी पत्नी यशोदा को पालन पोषण के लिए सौंप दिया था।

द्वापर युग में भोजवंशी राजा उग्रसेन मथुरा में राज करता था। उनके अत्याचारी व आततायी पुत्र कंस ने उन्हें राजगद्दी से उतारकर स्वयं मथुरा का राजा बन गया। कंस की एक बहन देवकी थी। कंस ने बड़े धूमधाम से देवकी का विवाह एक यदुवंशी सरदार वसुदेव से किया। विवाह के बाद कंस अपनी बहन देवकी को ससुराल पहुँचाने जा रहा था। रास्ते में एक भविष्यवाणी हुई “हे कंस— जिस देवकी को तू बड़े प्रेम से ले जा रहा है, उसी में तेरा काल बसता है। इसी के गर्भ से जन्मा आठवां बालक तेरा वध करेगा।” यह सुनकर कंस वसुदेव को मारने के लिए उद्यत हुआ, तब देवकी ने कंस से अत्यन्त विनयपूर्वक प्रार्थना की कि मेरे गर्भ से जो संतान पैदा होगी उसे मैं आपको सौंप दूँगी। मेरे पति को जीवन दान दे दीजिए। कंस ने देवकी की बात मान ली और वसुदेव व देवकी दोनों को कारागृह में डाल दिया। वसुदेव और देवकी को एक-एक करके सात बच्चे हुए और सभी को जन्म लेते ही कंस ने मार डाला। जब देवकी को आठवीं संतान होने वाली थी उसी समय नन्द की पत्नी यशोदा भी गर्भवती थीं। जिस समय देवकी-वसुदेव को पुत्र पैदा हुआ, उसी समय यशोदा के गर्भ से एक कन्या का जन्म हुआ जो कोई और नहीं “योगमाया” थीं। श्रीकृष्ण का जन्म होते ही काल कोठरी में अचानक प्रकाश हुआ और वसुदेव-देवकी के सामने शंख, चक्र, गदा और पद्म धारण किये हुए साक्षात् भगवान विष्णु चतुर्भुज रूप में प्रकट हुए। भगवान ने उन्हें दर्शन देकर कहा कि मेरे नवजात शिशु रूप धारण करते ही आप मुझे लेकर अपने मित्र नन्द जी के घर वृन्दावन जाओ और उनके यहाँ जन्मी कन्या को लाकर कंस के हवाले कर दो। श्रीकृष्ण का अवतरण होते ही वसुदेव की बेड़ियाँ खुल गई, कारागार के द्वार स्वयं ही खुल गये और पहरेदार गहरी निद्रा में सो गये। वसुदेव नवजात शिशु को सूप में रखकर कारागार से निकल

गये और काली अंधेरी रात में घनघोर वर्षा के समय उफनती यमुना नदी पार कर गोकुल में अपने मित्र नन्द गोप के घर गये। वसुदेव ने नवजात शिशु श्रीकृष्ण को यशोदा के बगल सुला दिया और यशोदा की कन्या को लेकर वापस कारागृह, मथुरा आ गये। उनके आते ही कारागृह के फाटक पूर्ववत् बन्द हो गये, पहरेदार जाग गये। अब कंस को सूचना मिली कि देवकी-वसुदेव को बच्चा पैदा हुआ है। कंस ने तुरन्त बन्दीगृह जाकर देवकी के हाथ से नवजात कन्या को छीन लिया तथा उसे पृथ्वी पर पटककर मारना चाहा, परन्तु वह कन्या (योगमाया) आकाश में उड़ गई और कहा कि "अरे मूर्ख! मुझे मारने से क्या होगा ? तुझे मारने वाला तो जन्म लेकर वृन्दावन जा पहुँचा है। जल्द ही वह तुझे तेरे पापों का दण्ड देगा।" श्रीकृष्ण का पालन- पोषण यशोदा व नन्द ने ही किया। श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव जन्माष्टमी के रूप में मनाया जाता है। गोकुल में यह त्योहार गोकुलाष्टमी के नाम से मनाया जाता है।

सिद्धपीठ श्री राम साईं धाम, अगया बुजुर्ग, कठौतिया, बभनान, बस्ती, उ०प्र०

राधा अष्टमी

श्री राधा रानी के जन्म दिवस को राधा अष्टमी या राधा जयन्ती के रूप में मनाया जाता है। पद्म पुराण के अनुसार राधा जी का जन्म निकुंज प्रदेश के बरसाना (रावल) के प्रतिष्ठित यादव राजा वृषभानु गोप और रानी कीर्ति के घर हुआ था। श्री राधा रानी जी भाद्रपद माह के शुक्लपक्ष की अष्टमी तिथि को अनुराधा नक्षत्र में मध्याह्न काल १२ बजे अवतीर्ण हुईं। ऐसी मान्यता है कि श्री राधा रानी एक सुन्दर मन्दिर प्रांगण स्थित तालाब में सुनहरे कमल के पुष्प में राजा वृषभानु और उनकी पत्नी कीर्ति को मिलीं।

हिन्दू मान्यता के अनुसार श्री राधा रानी जी को माता लक्ष्मी का अवतार माना जाता है। उनके प्राकट्य/अवतरण की तिथि को राधा अष्टमी उत्सव के रूप में मनाते हैं।

हिन्दू पंचांग के अनुसार श्री कृष्ण जन्माष्टमी के १५ दिन बाद राधा अष्टमी का पर्व मनाया जाता है। भगवान श्री कृष्ण का जन्म भाद्रपद माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को रात्रि १२ बजे (कृष्ण जन्माष्टमी) हुआ था जबकि श्री राधा रानी का जन्म (राधा अष्टमी) इसी माह के शुक्ल पक्ष की अष्टमी को मध्याह्न १२ बजे हुआ था।

राधा जी के बिना कृष्ण जी की पूजा अधूरी मानी जाती है। कृष्ण जन्माष्टमी का व्रत रखने वालों को राधा अष्टमी का व्रत भी अवश्य रखना चाहिए। श्री राधा रानी के बिना श्री कृष्ण का नाम अधूरा है। राधा नाम के जाप से भगवान श्री कृष्ण जल्दी प्रसन्न हो जाते हैं। मान्यता है कि राधा अष्टमी के व्रत के बिना कृष्ण जन्माष्टमी के व्रत का पूरा पुण्य प्राप्त नहीं होता है। राधा अष्टमी के दिन राधा और कृष्ण दोनों की पूजा की जाती है। जहाँ श्री राधा हैं वहाँ भगवान श्री कृष्ण रहते हैं और जहाँ दोनों रहते हैं वहाँ कभी किसी चीज का अभाव नहीं होता है।

श्री राधा जी भगवान श्री कृष्ण के प्राणों की अधिष्ठात्री देवी हैं, इसलिए भगवान सदा राधा जी के अधीन रहते हैं। श्री राधा जी भगवान की निजस्वरूपा सच्चिदानन्दमयी शक्ति हैं। वह ब्रह्मस्वरूपा हैं। श्री राधा रानी परिवार में सुख-शान्ति, समृद्धि, खुशहाली, संतान सुख और उन्नति देने वाली तथा मनोकामना पूर्ण करने वाली हैं।

दशहरा एवं विजयदशमी

विजयदशमी या विजयादशमी और दशहरा हिन्दुओं का महत्वपूर्ण त्यौहार है। पौराणिक कथाओं के अनुसार माँ कात्यायनी दुर्गा ने देवताओं की दुर्दशा देखकर एवं उनके प्रार्थना करने पर नौ रात्रि तथा दस दिन के युद्ध के उपरान्त महिषासुर नामक दैत्य का वध किया था। माँ के अश्विन (क्वार) मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि अर्थात् नवरात्रि के 09 दिन बीतने के बाद दसवें दिन (युद्ध के दसवें दिन) महिषासुर पर विजय प्राप्त करने के कारण इस माह की दशमी को विजयदशमी या विजयादशमी के रूप में मनाते हैं। विजया माता का एक नाम है। यह पर्व प्रभु श्रीराम और श्री कृष्ण के काल में भी मनाया जाता था। विजयादशमी में नौ दिनों तक देवी दुर्गा की पूजा अर्चना की जाती है। कई जगहों पर नौ दिनों तक माता दुर्गा की प्रतिमाएँ रखकर पूजा की जाती है और दसवें दिन उन मूर्तियों का जल में विसर्जन कर दिया जाता है। माता द्वारा दैत्य महिषासुर का वध करने के बाद से ही असत्य पर सत्य की जीत का पर्व विजयादशमी मनाया जाने लगा। विजयादशमी को शक्ति पूजा भी कहते हैं। इस कारण इस दिन शस्त्र पूजा व दुर्गा पूजा का महत्व है। महिषासुर का वध करने के बाद माँ महिषासुरमर्दिनि कहलाई।

पौराणिक कथाओं के अनुसार महिषासुर नामक दैत्य रम्भासुर का पुत्र था जो अत्यन्त शक्तिशाली था। उसने अमर होने की इच्छा से कठिन तपस्या कर ब्रह्मा जी को प्रसन्न किया। ब्रह्मा जी महिषासुर की तपस्या से प्रसन्न हुए और प्रकट होकर कहा कि “उठो वत्स ! इच्छानुसार वर मांगो। महिषासुर ने अमरत्व का वरदान मांगा। इसपर ब्रह्मा जी ने कहा कि मृत्यु को छोड़कर जो भी मांगना चाहो, मांग लो क्योंकि जन्म लिए हुए प्राणी की मृत्यु निश्चित है। महिषासुर ने बहुत सोच विचार कर मांगा कि हे प्रभो— देवता, असुर और मानव किसी से मेरी मृत्यु न हो। किसी स्त्री द्वारा मेरी मृत्यु निश्चित करने की कृपा करें। ब्रह्मा जी ने तथास्तु कहकर महिषासुर की इच्छानुसार उसे वरदान दे दिया।” वरदान के बाद वह तीनो लोकों पर अपना अधिकार जमाकर त्रिलोकाधिपति बन गया। दैत्य महिषासुर के कहर से प्रताड़ित सभी देवताओं ने भगवती महाशक्ति कात्यायनी की आराधना की। माँ देवताओं की रक्षा करने को सहर्ष तैयार हो गयीं। देवताओं की रक्षा करने के लिए माँ ने ऋषि कात्यायन की पुत्री के रूप में जन्म लिया। हिमवान ने युद्ध हेतु माँ को सवारी के लिए सिंह दिया तथा सभी देवताओं ने अपने अस्त्र—शस्त्र माँ भगवती कात्यायनी की सेवा में प्रस्तुत किये। माँ भगवती के कात्यायनी स्वरूप ने 09 रात्रि और 10 दिन तक चले युद्ध के दसवें दिन महिषासुर का वध किया।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम ने ऋष्यमूक पर्वत पर अश्विन मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवमी तक आदिशक्ति की उपासना की थी। इसके बाद भगवान

श्रीराम इसी दिन किष्किंधा से लंका के लिए रवाना हुए थे और अगले दिन दशमी की तिथि को राक्षस रावण का वध किया था। श्रीराम द्वारा रावण का वध करने के उपलक्ष्य में दशहरे का पर्व बुराई पर अच्छाई की जीत की खुशी में मनाया जाता है। इसी कारण इस दिन शस्त्र पूजा और राम पूजा का महत्व है। दशहरे में रावण, कुंभकरण और मेघनाद के पुतले का दहन किया जाता है। पूरे दस दिनों तक रामलीला आयोजित की जाती है। श्रीराम ने रावण का वध करने से पूर्व नीलकंठ पक्षी का दर्शन किया था। नीलकंठ को शिवजी का रूप माना जाता है। अतः दशहरे के दिन नीलकंठ पक्षी को देखना अत्यन्त शुभ माना जाता है।

पौराणिक ग्रन्थों में यह भी मान्यता है कि पाण्डवों ने अपना अज्ञातवास समाप्त होते ही इसी दिन शक्ति पूजन कर शमी के वृक्ष में रखे अपने शस्त्र पुनः हाथों में लिए। इसी दिन पाण्डवों ने कौरवों पर विजय प्राप्त की थी। यह धर्म की अधर्म पर जीत थी।

स्पष्ट है कि प्राचीन काल से ही अश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी को विजयादशमी का उत्सव मनाया जाता रहा है। बाद में प्रभु श्रीराम ने इसी दिन लंका के राजा दशानन रावण का वध किया तो इस दिन को दशहरा (दशहरा=दशहोरा=दसवीं तिथि=दशमी) भी कहा जाने लगा।

सिद्धपीठ श्री राम साई धाम, अगया बुजुर्ग, कठौतिया, बभनान, बस्ती, उ०प्र०

रामनवमी

शास्त्रों के अनुसार त्रेतायुग में रावण के अत्याचारों को समाप्त करने तथा धर्म की पुनर्स्थापना के लिए भगवान विष्णु ने मृत्युलोक में श्री राम के रूप में अवतार लिया था। भगवान श्री राम का जन्म त्रेतायुग में चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को पुनर्वसु नक्षत्र तथा कर्क लग्न में अयोध्या के राजा दशरथ की पत्नी कौशल्या की कोख से हुआ था। इसलिए चैत्र शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को भगवान राम के जन्मदिवस पर रामनवमी का उत्सव मनाया जाता है। भगवान राम का जन्म मध्याह्न काल के समय हुआ था। भगवान राम को भगवान विष्णु का सातवाँ अवतार माना जाता है।

रामनवमी चैत्र नवरात्रि का ही अंग है जो चैत्र नवरात्रि की नवमी तिथि (चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि) को मनाया जाता है। रामनवमी के दिन ही चैत्र नवरात्रि समाप्त हो जाती है। चैत्र मास से ही हिन्दू नव वर्ष की शुरुआत भी होती है।

राजा दशरथ की तीन रानियाँ थीं लेकिन बहुत समय तक उन्हें सन्तान सुख नहीं था। पुत्र प्राप्ति हेतु राजा दशरथ ने ऋषि वशिष्ठ के आदेश से पुत्रकामेष्टि यज्ञ किया। महर्षि ऋष्यश्रृंग (श्रिंगी ऋषि) ने मखौड़ा नामक स्थान पर (वर्तमान समय में बस्ती जनपद में स्थित) यज्ञ पूर्ण किया। यज्ञ समाप्ति के बाद यज्ञकुण्ड से दिव्य खीर भरी कटोरी प्राप्त हुई। महर्षि ऋष्यश्रृंग ने राजा दशरथ की तीनो पत्नियों को खीर खाने को दी। खीर खाने के कुछ समय बाद ही तीनो रानियाँ गर्भवती हो गईं। राजा दशरथ की सबसे बड़ी रानी कौशल्या ने श्री राम को, कैकेयी ने भरत को तथा सुमित्रा ने जुड़वा बच्चों लक्ष्मण और शत्रुघ्न को जन्म दिया।

गोस्वामी तुलसीदास ने श्रीरामचरितमानस के बालकाण्ड में स्वयं लिखा है कि उन्होंने इस ग्रन्थ की रचना का आरम्भ अयोध्यापुरी में विक्रम सम्वत् १६३१ (१५७४ ईसवी) के रामनवमी, जो मंगलवार का दिन था, को किया था। श्री राम के जन्म का वर्णन करते हुए उन्होंने श्रीरामचरितमानस में रामावतार (भये प्रकट कृपाला दीन दयाला कौशल्या हितकारी) लिखा।

सिद्धपीठ श्री राम साई धाम, अगया बुजुर्ग, कठौतिया, बभनान, बस्ती, उ०प्र०

हनुमान जन्मोत्सव

हनुमान जन्मोत्सव वर्ष में दो बार मनाया जाता है। पहला जन्मोत्सव चैत्र मास की पूर्णिमा (मार्च-अप्रैल) को मनाया जाता है तथा दूसरा जन्मोत्सव कार्तिक मास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी (अक्टूबर-नवम्बर) को मनाया जाता है। एक बार जन्मोत्सव तथा दूसरी बार विजय अभिनन्दन महोत्सव/विजय दिवस के रूप में मनाया जाता है।

- 1- वाल्मीकि रामायण के अनुसार बजरंगबली का जन्म कार्तिक मास के कृष्णपक्ष के चतुर्दशी (नरक चतुर्दशी) को हुआ था। उस दिन मंगलवार था। जन्म मेष लग्न और स्वाति नक्षत्र में हुआ था।

पौराणिक कथा के अनुसार राजा दशरथ तथा उनकी तीनों पत्नियों के पुत्र प्राप्ति यज्ञ से प्रसन्न होकर अग्निदेव ने उन्हें खीर खाने को दी। उस खीर का एक हिस्सा चील लेकर उड़ गया। उस समय माता अंजना पूजा कर रही थीं। जब चील उनके आश्रम के ऊपर से उड़ी तब उसका कुछ अंश उनके मुंह में आ गिरा जिससे वो गर्भवती हो गयीं और उन्होंने भगवान शिव के ग्यारहवें रुद्र अवतार के रूप में हनुमान जी को जन्म दिया।

- 2- पौराणिक मान्यता है कि एक बार भूख लगने पर बाल्यावस्था में बजरंगबली ने भगवान सूर्य को फल समझकर निगल लिया। इस पर इन्द्रदेव ने उन्हें दण्डित करने हेतु वज्र से प्रहार किया जो बजरंगबली की ठोड़ी पर जा लगा। वज्र के प्रहार से बजरंगबली बेहोश हो गये। अपने पुत्र को संकट में देख पवन देव अत्यन्त क्रोधित हो गये और उन्होंने पूरे ब्रह्मांड की प्राण वायु को रोक दिया जिससे हाहाकार मच गया। इसपर सभी देवताओं ने ब्रह्मा जी के साथ पवन देव से प्राण वायु को फिर से प्रवाहित करने की प्रार्थना की और बजरंगबली को जीवनदान दिया। यह चैत्र मास की पूर्णिमा का दिन था। इसलिए प्रत्येक वर्ष चैत्र मास की पूर्णिमा को बजरंगबली को नया जीवन मिलने के कारण हनुमान जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाने लगा।

सिद्धपीठ श्री राम साई धाम, अगया बुजुर्ग, कठौतिया, बभनान, बस्ती, उ०प्र०

पुरुषोत्तम मास/मलमास/अधिकमास

हिन्दू कैलेण्डर में सूर्य की गति के अनुसार सौर मास, चन्द्रमा की गति के अनुसार चन्द्र मास और नक्षत्र की गति के अनुसार नक्षत्र मास होता है। हिन्दू कैलेण्डर चन्द्र कैलेण्डर पर आधारित है जो चन्द्रमा के चरण/चक्र/गति का अनुसरण करता है। सौर मास 30 या 31 दिन (सौर वर्ष 365 दिन, 15 घटी, 31 पल व 30 विपल अर्थात 365 दिन 06 घण्टे) का होता है जबकि चन्द्र मास लगभग 29.5 से 30 दिन (चन्द्र वर्ष 354 दिन, 22 घटी, 01 पल व 23 विपल अर्थात 354 दिन 08 घण्टे) का होता है। इसी कारण चन्द्र मास 354 से 356 दिन का होता है जबकि सौर मास 365 या 366 दिन का होता है। इस प्रकार प्रत्येक वर्ष चन्द्र मास और सौर मास में 10 से 11 दिन (10 दिन, 53 घटी, 30 पल व 07 विपल अर्थात 10 दिन 22 घण्टा) का अन्तर हो जाता है और प्रत्येक 03 वर्ष में यह अन्तर 30 से 31 दिन अर्थात 01 पूर्ण माह का हो जाता है। चन्द्र मास और सौर मास को एक जैसा बनाने के लिए चन्द्र मास में प्रत्येक तीसरे वर्ष 01 अतिरिक्त मास जोड़ लिया जाता है। ऐसा सौर मास और चन्द्र मास के बीच अन्तर को समायोजित करने के लिए किया जाता है। चन्द्र कैलेण्डर में प्रत्येक तीसरे वर्ष एक अतिरिक्त मास को अधिकमास के रूप में जोड़ा जाता है। उस वर्ष के चन्द्र कैलेण्डर में 12 मास के स्थान पर 13 मास हो जाते हैं। इस अधिकमास को पुरुषोत्तम मास, मलमास, मलमच्छ भी कहा जाता है। हिन्दू चन्द्र कैलेण्डर में इस अतिरिक्त मास की स्थिति फिक्स्ड/स्पष्ट रूप से निर्धारित नहीं है। अधिक मास के माह का निर्णय सूर्य संक्राति के आधार पर किया जाता है, जिस माह सूर्य संक्राति नहीं होती है वह मास अधिक मास कहलाता है अर्थात इस माह में कोई संक्राति नहीं आती है। यह चन्द्र मास के बारह माह के मध्य कभी भी पड़ सकता है।

चन्द्र कैलेण्डर के बारह महीने किसी न किसी एक देवता को समर्पित है। मलमास या अधिकमास किसी देवी-देवता को समर्पित न होने के कारण देवताओं और मनुष्यों द्वारा नकार दिया गया। इससे दुखी होकर मलमास ने भगवान विष्णु की घोर तपस्या कर उन्हें अपनी व्यथा सुनाई और कहा कि मेरी हर जगह निन्दा हो रही है, मुझे किसी भी कार्य के लिए स्वीकार नहीं किया जा रहा है और न ही कोई मेरा स्वामी ही बनना चाह रहा है। मलमास की बात सुनकर भगवान विष्णु ने द्रवित होकर कहा कि मैं तुम्हें स्वीकार करता हूँ और आज से मैं ही तुम्हारा स्वामी हूँ। इसीलिए इस माह में भगवान विष्णु की पूजा अर्चना की जाती है। भगवान श्रीहरि विष्णु, जो स्वयं सृष्टि के संचालक हैं, के इस माह के स्वामी होने के कारण इसे पुरुषोत्तम मास कहा जाता है।

इस माह में भौतिक जीवन से सम्बन्धित मांगलिक कार्य यथा विवाह, कर्णवेध, चूड़ाकरण, मुण्डन, गृह प्रवेश, गृह निर्माण आदि वर्जित है परन्तु भगवान की आराधना, जप—तप, तीर्थयात्रा, दान—पुण्य आदि का विशेष महत्व है। इस माह में भगवान विष्णु की आराधना से विशेष फल प्राप्त होते हैं। इस माह में श्री विष्णु पूजन, भगवान सत्यनारायण की पूजा, द्वादशाक्षर श्रीवासुदेव मन्त्र का जाप, अष्टाक्षर नारायण मन्त्र, श्रीविष्णु सहस्रनाम, श्रीराम सहस्रनाम, श्रीमद्भगवत् गीता, श्रीकृष्ण सहस्रनाम, श्रीविष्णु पुराण आदि का पाठ अत्यन्त शुभ एवं लाभकारी माना गया है। अधिकमास अध्यात्म के लिए सर्वथा अनुकूल मास है।

सिद्धपीठ श्री राम साईं धाम : इतिहास

बस्ती जनपद में जिला मुख्यालय से लगभग ४० किमी, हरैया तहसील से १७ किमी तथा बभनान रेलवे स्टेशन से ५ किमी दूर श्री राम साईं धाम मन्दिर स्थित है। मंदिर परिसर में प्राचीन काली माँ मंदिर के साथ साथ शिव मंदिर, श्री हनुमान जी, श्री राम दरबार, श्री राधा-कृष्ण जी, श्री लक्ष्मी-गणेश जी तथा श्री साईं नाथ जी के भव्य विग्रह भी स्थापित हैं।

मन्दिर परिसर की भूमि तपोभूमि रही है। लगभग १५० वर्ष पूर्व ग्राम में स्व० श्री जगमोहन लाल श्रीवास्तव जी रहते थे जो ग्राम के जमींदार थे। उनका क्षेत्र तथा तहसील में बहुत सम्मान हुआ करता था। वह तहसील में वसीका-नवीस (बैनामा लेखक) भी थे। उनका परिवार बड़े लाला के परिवार के नाम से जाना जाता था तथा गाँव बड़े लाला के गाँव के नाम से जाना जाता था। वे लोग सम्पन्न होने के साथ साथ अत्यन्त धार्मिक, मिलनसार, दीन दुखियों की मदद करने वाले, समाज सुधारक तथा ईश्वर में आस्था रखने वाले थे। गाँव के लोगों की धार्मिक भावना तथा सनातन धर्म में आस्था से आह्लादित होकर ग्रामवासियों को पूजा अर्चना एवं एकसाथ सनातन धर्म पर्व/उत्सव मनाने के निमित्त स्थान उपलब्ध कराने के लिए स्व० श्री जगमोहन लाल श्रीवास्तव जी द्वारा अपनी जमीन पर सभी के सहयोग से माँ काली के मन्दिर का निर्माण कराया गया। तत्समय यह मंदिर खपरैल का बना हुआ था।

कालान्तर में लगभग १०० वर्ष पूर्व अयोध्या के प्रमोद वन बड़ी कुटिया के महंत बाबा छत्ता दास जी महाराज अपने भिक्षाटन प्रवास के दौरान इसी मंदिर के समीप कुटिया बनाकर रहने लगे तथा सनातन धर्म का प्रचार करने लगे। आजादी के बाद इसी प्रमोद वन बड़ी कुटिया के महंत बाबा रामहरख दास जी महाराज भी यहाँ उसी कुटिया में निवास करने लगे। माँ काली का खपरैल का मंदिर जीर्ण-शीर्ण हो जाने के कारण उन्होंने अपने त्रिशूल से मंदिर के खपरैल के ढाँचे को हटाकर सभी क्षेत्रवासियों के सहयोग से काली माँ का एक पक्का छोटा मंदिर बनवाया। उन्होंने देवी माँ के मंदिर के साथ ही अपना त्रिशूल भी स्थापित कर दिया तथा वहीं बगल में एक शिवलिंग स्थापित कर देवाधिदेव महादेव की पूजा शुरू कराया। लगभग ४ वर्ष पूर्व २०१६ में अगया ग्राम के स्व० श्री राम आसरे लाल श्रीवास्तव के सुपुत्र श्री सुधीर चन्द्र श्रीवास्तव जी ने इसी स्थान पर भव्य शिव मन्दिर का निर्माण कराया। वर्तमान में यह शिव मन्दिर श्री सर्वेश्वर महादेव के नाम से जाना जाता है। बाबा रामहरख दास जी ने मंदिर के निकट ही पशु-पक्षी, जानवर आदि के पानी पीने के लिए एक तालाब भी खुदवाया। बाद में अगया गाँव के ही स्व० श्री राम बहादुर सिंह जी (पूर्व प्रधान) द्वारा माँ काली के मंदिर का विस्तार कराया गया।

वर्ष २०१२ में परिसर में श्री साईं नाथ मंदिर का निर्माण गाँव के ही श्री रामभजन सिंह जी द्वारा कराया गया। वर्ष २०२२ में गाँव के स्व० श्री राम खेलावन लाल श्रीवास्तव के सुपुत्र श्री विनोद कुमार श्रीवास्तव जी द्वारा इसी परिसर में ही जन सहयोग से श्री राम दरबार, श्री राधा-कृष्ण, श्री हनुमान जी तथा श्री लक्ष्मी-गणेश जी का मंदिर बनवाकर विग्रहों की प्राण प्रतिष्ठा करायी गयी। वर्तमान में यह मन्दिर परिसर श्री राम साईं धाम के नाम से जनमानस में विख्यात होकर लोगों की धार्मिक आस्था का केन्द्र बना हुआ है तथा सनातन धर्म के ध्वज का वाहक बनकर धर्म की ज्योति को सभी दिशाओं में फैला रहा है।

श्री विन्दु लाल श्रीवास्तव, श्री राजेश सिंह, श्री कृपाशंकर सिंह आदि मंदिर में निःस्वार्थ सेवा कर सनातन धर्म का प्रचार प्रसार कर रहे हैं।